बकरी पालकों के लिए जनन संबंधी जानकारियां

डॉ. राजकुमार बेरवाल (MVSc, Ph.D.)

प्रभारी अधिकारी एवं सहायक आचार्य

पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय प्रसार एवं अनुसंधान केन्द्र

सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर), फोन : 01509-221448

e-mail: vutrcsuratgarh.rajuvas@gmail.com

सम्पर्क सूत्र - डॉ. अनिल घोड़ेला, मो. 99280-22555

RSETI
Rural Self Employment Training Institutes
Powering Rural Entrepreneurship

ओ बी सी ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान

श्रीगंगानगर-335001 (राजस्थान)

प्रसार शिक्षा निदेशालय

राजस्थान पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय

बीकानेर-334001 (राजस्थान)

Scanned with CamScanner

हमारे देश में आर्थिक और सामाजिक दृष्टिकोण से भूमिहीन मजदूर, लघु एवं सीमांत कृषक अपने परिवार की पोषण तथा अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति प्राचीन काल से ही बकरी पालन व्यवसाय से करते आ रहे हैं। बकरी मांस की लगातार बढ़ती मां से परंपरागत बकरी पालकों के अतिरिक्त अन्य समुदाय के लोगों में भी इस व्यवसाय के प्रति रूझान पैदा हुआ है। ऐसे में आवश्यक हो जाता है कि बकरी पालन से जुड़ी विभिन्न वैज्ञानिक तकनीकियों की समुचित जानकारी प्राप्त कर उनका उपयोग किया जाये और अधिक से अधिक लाभ कमाया जाये।

बकरी उत्पादन बनाये रखने के लिये नियमित जनन आवश्यक है। आज आवश्यकता इस बात की है कि बकरी पालकों को जनन से जुड़े विभिन्न पहलुओं की समुचित जानकारी हो जिससे बकरियों की जनन क्षमता को बढ़ाया जा सके। बकरी पालन को सफल बनाने के लिए आवश्यक है कि:-

- बकरी कम उम्र में गर्भधारण कर ले।
- बकरी प्रति ब्यांत अधिकाधिक बच्चे दे।
- ब्याने के बाद बकरी जल्दी पुन: गाभिन हो जाये।
- बकरी अपने जीवन काल में अधिकाधिक बच्चे पैदा करे।

बकरियों की जनन क्षमता उम्र के साथ बढ़ती है। एक स्वस्थ बकरी 7-8वर्ष की आयु तक तथा बकरा 4-7 वर्ष तक जनन क्षमता बनाये रखती है।

1. **प्रजनक बकरों का चुनाव** - आनुवंशिक सुधार के लिए प्रजनक बकरे का महत्वपूर्ण योगदान होता है। बकरी उत्पादन बढ़ाने के लिये आवश्यक है कि अधिक उत्पादन व वर्णित नस्ल के बीजू बकरों को गर्भाधान के लिए प्रयोग में लाया जाये। इसके लिए रेवड़ मतें से अधिक वृद्धि दर वाले नर मेमनों का चयन करें। चयन करते हुए ध्यान रखें कि इनकी मां की दुग्ध उत्पादन क्षमता भी अधिक हो। नर देखने में स्वस्थ, चुस्त व फुर्तीला हो, उसके दोनों अंडकोष पूर्ण विकसित व समान आकार के हो। नस्ल के अनुसार (6-12 माह) चयन कर उनकी आवश्यक खिलाई-पिलाई करें। नर को मादा से अलग रखें। प्राकृतिक गर्भाधान के लिये एक बीजू बकरे से एक प्रजनन काल में अधिकतम 40-50 बकरियों को ग्याभिन करोयं। इस प्रकार एक बकरे को रेवड़ में प्रजनन के लिए 2 वर्ष से ज्यादा प्रयोग न करें। इसके उपरान्त बकरे को बदलकर प्रजनन करायें। इससे बकरियों की जनन क्षमता बनी रहती है तथा अन्त: प्रजनन की सम्भावना नहीं रहती है।

2. **बकरी का चुनाव व गर्भाधान** - उत्पादन की दृष्टि से उत्तम मादा का चयन भी उतना ही आवश्यक है जितना कि नर का। दुग्ध उत्पादन के लिये पाली जाने वाली बकरियां जैसे जमुनापारी, बीटल, जखराना, सिरोही आदि 20-26माह में पहली बार बच्चा दे देती है। मांस उत्पादन के उद्देश्य से पाली जाने वाली बकरियां जैसे बरबरी, ब्लैक बंगाल, गंजाम, मालावारी इत्यादि अपेक्षाकृत जल्दी (12-15 माह) में पहली बार मां बन जाती हैं। बकरियों की उनकी नस्ल के अनुसार आयु तथा वजन प्राप्त कर लेने पर (प्रौढ़ वजन का 60-70 प्रतिशत) हीह ग्याभिन करायें। बकरियां में मदकाल के लक्षण स्पष्ट होते हैं यह लक्षण निम्न हैं:-

- बेचैन होना तथा दाना-चारा कम खाना।
- बार-बार पेशाब करना तथा पूंछ बार-बार तेजी से हिलाना।
- झुण्ड की दूसरी मादा बकरियों पर चढ़ना तथा बकरे को इसकी स्वीकृति देना।
- बकरी की योनि का लाल होकर चिकनी व लसलसी हो जाना।

Scanned with CamScanner

- योनि मार्ग से पारदर्शी तोड़ का गिरना।

योनि द्रव्य मदकाल के आरम्भ में कम व पतला, मध्यावस्था में अधिक व पारदर्शी तथा अन्त में कम व गाढ़ा होने लगता है। बकरियां सामान्यत: 24-40 घंटे तक मदकाल में रहती हैं तथा इसी सीमित अवधि में बीजू बकरे से गर्भाधान कराने पर गर्भधारण करती हैं। अगर बकरी सांय को मदकाल में आये उसे दूसरे दिन सुबह और शाम को ग्याभिन करायें। सुबह मदकाल में आयी बकरी को उसी दिन सांय तथा दूसरे दिन सुबह ग्याभिन करायें। प्रजनन काल में बकरियों पर व्यक्तिगत ध्यान रखें तथा मदकाल का पता करने के लिए एक बकरे के पेट पर कपड़ा बांधकर बकरियों के झुण्ड में रोजाना सुबह-शाम घुमाने पर मदकाल में आयी बकरियों का पता चल जाता है। गर्भाधान के बाद अगर बकरी पुन: मद के लक्षण प्रकट करे तो पुन: ऊपर बताई विधि से ग्याभिन करायें। बकरियां 2-3 हफ्ते बाद ग्याभिन न ठहरने पर पुन: मदकाला में आती है। अत: उनको पुन: ग्याभिन करायें।

3. गर्भावस्था व प्रसवकाल - बकरियों में गर्भकाल की अवधि लगभग 5 माह (143-148दिन) होती है। गर्भावस्था के अंतिम 5-6सप्ताह में बकरियों को पौष्टिक आहार (रातब) देना चाहिए, जिससे स्वस्थ तथा अधिक वजन वाले मेमनें पैदा हों। ब्याने से 15 दिन पूर्व उनके शरीर के पिछले हिस्से (मुख्यत: बाह्य जननागों) के आस-पास के अनावश्यक बालों को काट दें। ब्याने के लिये प्रयुक्त होने वाले बाड़े को सूखा रखें। इसमें एक सप्ताह पूर्व चूना डालकर सूखी घास का बिछोना दें। प्रसव वेदना के शुरू होने पर बकरी को विचलित न करें। अधिकतर बकरियां लेटकर बच्चा देती हैं। सामान्य प्रसव में बच्चे के आगे के दोनों पैर तथा सिर पहले निकलते हैं। इसके बाद शरीर के अन्य अंग बाहर आते हैं। बकरी का जेर 3-6घन्टें में निकल आता है। अगर बकरी प्रसव में कठिनाई का अनुभव करे तो शीघ्र पशु चिकित्सक की सहायता लें अन्यथा यह बकरी व बच्चे दोनों के लिए घातक हो सकता है।

ब्याने के बाद मेमने के मुंह तथा नाक के अन्दर-बाहर लगी म्यूकस की परत को सूखे, मुलायम कपड़े से साफ कर बकरी को अपने बच्चे को चाटने दें। मेमने की नाभि अगर प्रसव के समय नहीं टूटी है तो उसे साफ ब्लेड से (डिटोल में डालकर) धागे से बांधकर ऊपर से काट दें। नवजात बच्चों कीर मां का शुरू का दूध (खीस) ब्याने के 2 घंटे के अंदर अवश्य पिलायें तथा इस क्रम को एक सप्ताह तक सुबह-शाम जारी रखें। खीस नवजात बच्चों में रोगों से लड़ने की प्रतिरोधक क्षमता प्रदान करता है। दो माह उपरांत बच्चों को मां का दूध पिलाना बंद करें। इससे बकरी के पुन: गर्मी में आकर गर्भधारण की संभावना बढ़ जाती है।

बकरी बालकों को अंत में यही सलाह दी जाती है कि वह उपरोक्त जनन संबंधी जानकारियों को अपनाकर अपने रेवड़ की जनन क्षमता को बनाये रख सकेंगे। इस प्रकार बकरी पालन एक लाभकारी व्यवसाय सिद्ध होगा।

Scanned with CamScanner

तकनीकी मार्गदर्शन हेतु आभार

प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा

कुलपति

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर

प्रो. (डॉ.) अवधेश प्रताप सिंह

निदेशक, प्रसार शिक्षा

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर

सम्पर्क सूत्र :

डॉ. राजकुमार बेरवाल

प्रभारी अधिकारी, पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़

फोन : 01509-221448

डॉ. अनिल घोड़ेला, मो. 9660669992

Scanned with CamScanner